ॐ

॥ श्री काञ्ची कामकोटि पीठ और काश्मीर प्रदेश का सम्बन्ध ॥

यह सभी लोगों को विदित है कि लगभग दो हजार पाँच सौ वर्षों के पूर्व भगवान् शङ्कर ने भूलोक में सर्वत्र धर्म की हानि को देखते हुए केरल के कालटी गांव मे श्रीमद् आद्य शङ्कराचार्य के रूप में अवतार लेकर धर्म की पुनःस्थापना की । और धर्म रक्षा की परम्परा को संरक्षित करने के लिए चार दिशाओं में चार पीठों की स्थापना कर अपने शिष्यों को पीठाधीश बनाया । तथा काञ्चीपुर में विराजमान कामकोटिपीठ में स्वयम् अधिष्ठित होकर शारदामठ में वास किए, और वहीं ब्रह्मलीन हुए । यह विषय शिवरहस्य आदि ग्रन्थों में कहा गया है, और सभी सज्जनों के द्वारा अङ्गीकृत है । प्राचीन काल से काञ्ची में वेद विद्या का संरक्षण तथा संवर्धन कार्य चला आया है । इसी प्रकार काश्मीर में भी वेद विद्या देदीप्यमान थी । काञ्ची को दक्षिणकाश्मीर भी कहा जाता है । ऐसा काश्मीर और काञ्चीपीठ का सम्बन्ध अतीव घनिष्ठ है । ग्रन्थों के आधार पर यथामति उस का विवरण सङ्क्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है ।

कामकोटि पीठ के प्रथम पीठाधीश **आद्य शङ्कराचार्य जी महाराज** (ई०पू० ५०९-४७७) स्वयं काश्मीर गये थे । इस विषय में सन्देह नहीं है । काश्मीर के गोपादित्य नामक महाराज के अपने शासन काल (ई०पू० ४१७-३५७) से कुछ ही समय पूर्व काश्मीर में भगवान् शङ्कराचार्य के आगमन हुआ था । महाराज ने इसीको उपलक्षित करके श्रीनगर में उनका मन्दिर निर्माण किया था । (यह विषय ग्वाशाह लाल नामक शोधकर्ता से विरचित और ई० १९३२ में प्रकाशित "काश्मीर का सङ्क्षिप्त इतिहास" नामक ग्रन्थ में है ।)

काञ्ची परम्परा में द्वितीय स्थान में विराजमान **सुरेश्वराचार्य जी महाराज** (ई०पू० ४७७-४०७) का जन्म काश्मीर में हुआ । इस विषय में कामकोटि आचार्य परम्परा का इतिहास सङ्ग्रहात्मक पुण्यश्लोकमञ्जरी का "गौडः काश्मीरजन्मा" यह वचन प्रमाण है । सारस्वत कान्यकुब्ज गौड उत्कल मैथिल इन पाँच गौडों में ये कान्यकुब्ज गौड थे । इनके पिता हिममित्र काश्मीरराजगुरु थे । ये काञ्ची में ब्रह्मलीन हुए थे ।

कामकोटि पीठ के सोलहवें पीठाधीश **उज्ज्वल शङ्करेन्द्रसरस्वती जी महाराज ने** (सन् ३२९-३६६) अपने पीठाधिपत्य काल में सर्वत्र भारत में सनातन धर्म के विरोधियों को पराजित कर भारत में वर्णाश्रम धर्म का प्रतिष्ठापन किया । अन्त में काश्मीर देश में ब्रह्मपद प्राप्त किए । काश्मीर में कलापुर नामक इन का सिद्धि स्थल इनके नाम से उज्ज्वलमहायतिपुर नाम से प्रसिद्ध हुआ । यह विषय पुण्यश्लोकमञ्जरी में है ।

सत्रहवें पीठाधीश **गौड सदाशिवेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (सन् ३६६-३७४) के विषय में महायोगी सदाशिवब्रह्मेन्द्रसरस्वती विरचित गुरुरत्नमाला नामक आचार्य परम्परा स्तुति की व्याख्या सुषमा में कहा गया है कि – ये काश्मीर राजमन्त्री देवमिश्र शर्मा के पुत्र थे । देवमिश्र शर्मा को जैनों ने अपने मत में आकृष्ट करा लिया था । परन्तु ये शैशव में ही "सनातन धर्म ही श्रेष्ठ है, अद्वैत ही सत्य है" ऐसा कहते थे । इसी कारण असूया ग्रस्त जैनों ने इन्हें सिन्धुवेणी नदी में बहा दिया । किन्तु नदी ने इन को कमलपत्र में वहन करके, पुत्र की इच्छावाले, स्नान करने के लिए नदी में उतरे हुए पुष्पपुरवासी भूरिवसु शर्मा के हाथों मे पहुँचा दिया । उनके द्वारा इन का पालन और पोषण हुआ, और

बाद में इन्होने उज्ज्वल शङ्कराचार्य जी महाराज के पास से संन्यासाश्रम ग्रहण किया । अपने गुरुचरणों के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् आठ वर्षों में शिष्यों को लगभग पचास बार ब्रह्मसूत्र भाष्य का अध्यापन कर, सञ्चार करते हुए , महाराष्ट्र के त्र्यम्बकेश्वर क्षेत्र में ब्रह्मलीन हुए ।

अठारहवें पीठाधीश्वर **श्री सुरेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (सन् ३७४-३८४) ने काश्मीर नरेश सुरेन्द्र की सभा में महानास्तिक दुर्दीदिवि के साथ वाद करके उसे पराजित किया । तब महाराज जी की महिमा को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से साक्षाद् देवगुरु बृहस्पति ने मनुष्य रूप ग्रहण करके दुर्दीदिवि के पक्ष से लोकायत वाद का आश्रयण करके वाद किया था । महाराज जी ने उन्हें भी जीत कर सनातन धर्म और वैदिक सिद्धान्त की नींव प्रतिष्ठापित की थी । तब काश्मीर नरेश सुरेन्द्र ने उनके बहुविध सम्मान के साथ भूमि समर्पण की थी ।

बीसवें पीठाधीश्वर **मूक शङ्करेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (सन् ३९७-४३६) का भी काश्मीर के साथ सम्बन्ध है । मातृगुप्त नामक एक ब्राह्मणवटु उनकी सेवा करता था । यह मातृगुप्त अपने कविताशक्ति पर गर्वित था । उसके गर्व को दूर करने के लिए महाराज जी ने अपने कृपाकटाक्ष से श्रीमठ का अश्वपालक रामिल तथा गजपालक मेण्ठ को तत्काल कवि बना दिया । इसे देखकर मातृगुप्त "कविता करने की शक्ति क्षणभर में प्राप्त तथा नष्ट भी हो जाती है" यह जानकर अपने गर्व को छोड़कर विवेकी बना ।

उन दिनों में उज्जयिनी में हर्षविक्रमादित्य नामक चक्रवर्ती राज्य करता था । वह आचार्यचरणों के प्रति बड़ी भक्ति रखता था । आचार्यचरणों ने राजा की सभा में मातृगुप्त को आस्थान कवि के रूप में भेजा । राजा का मातृगुप्त के प्रति भी प्रेम था । इस बीच काश्मीर में हिरण्य नामक नरेश की निस्सन्तान अवस्था में मृत्यु हुई । उसका भाई तोरमाण था । तोरमाण की भी मृत्यु होनेपर उसकी गर्भवती पत्नी अञ्जना ने एक कुम्हार के घर शरण ली । वहाँ उसी को प्रवरसेन नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

हिरण्य के मृत्यु के पश्चात् मन्त्रियों के अनुरोध से, और मातृगुप्त की कवितासामर्थ्य के सम्मान के रूप में, उज्जयिनी का सम्राट् हर्षविक्रमादित्य ने उनको काश्मीर का राजा बनाया । मातृगुप्त पाँच वर्षों तक राज्य करता रहा । उसके बाद चक्रवर्ती हर्षविक्रमादित्य का मरण हुआ । मातृगुप्त ने इस वार्ता को सुनकर अत्यन्त विरक्त होकर, प्रवरसेन को राजा बनाकर, अपने गुरु मूकशङ्कर जी महाराज के पास वापस आया, तथा पश्चात् सन्न्यास दीक्षा प्राप्त की ।

उन दिनों में काश्मीर के पावन तीर्थों के दर्शनार्थियोंको पर्वत श्रृङ्खलाओं के दुर्गम वन प्रदेशों में यात्रा करने में बहुत कष्ट उठाना पड़ता था । इसे दूर करने के लिए काश्मीर के राजसिंहासनाधिरूढ प्रवरसेन से अनुरोध कर काञ्ची श्रीचरणों ने सुषमा नामक सुन्दर महामार्ग बनवाया था । इनके इस कार्य की प्रशंसा आचार्य के अनुग्रहपात्र मातृगुप्त रामिल मेण्ठक आदि शिष्यों ने अपने ग्रन्थों में की है । ये सभी विषय गुरुरत्नमाला व्याख्या सुषमा में तथा प्रसिद्ध आन्ध्रदेशीय इतिहाससंशोधक कोटा वेङ्कटाचल महोदय के ग्रन्थों मे उपलब्ध होते है ।

ये मातृगुप्त ही बाद में **जाह्नवी चन्द्रचूडेन्द्रसरस्वती महाराज** (ई० ४३६-४४६) नाम से कामकोटि पीठ के इक्कीसवें पीठाधीश्वर के रूप में पीठासीन हुए । दस वर्ष तक गङ्गातीर में तपस्या करके गङ्गातट में ही ब्रह्मपद प्राप्त किए ।

इकतीसवें पीठाधीश्वर **शीलनिधि ब्रह्मानन्दघनेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० ६५४-६६७) काश्मीर के ब्राह्मणवंशी राजा ललितादित्य के सम्मानपात्र हुए । पूरे भारतवर्ष में दक्षिणापथ तक अपने विजय ध्वज को फहराता हुआ राजा ललितादित्य काञ्चीमण्डल के कामकोटि पीठ को प्राप्त कर बहुत काल तक श्रीगुरु की सेवा करता रहा । इस विषय का उल्लेख महाकवि भवभूति ने महापुरुषविलास नामक काव्य में की है । यह विषय गुरुरत्नमाला-सुषमा-पुण्यश्लोकमञ्जरी आदि ग्रन्थों में वर्णित है ।

बत्तीसवें पीठाधीश्वर **चिदानन्दघनेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० ६६७-६७१) भी उसी ललितादित्य के सम्मानपात्र हुए । इन्होनें अपने गुरुजी के ब्रह्मलीन हो जाने पर गुरुजी का पूर्वाश्रमसम्बन्धि ज्येष्ठरुद्र इस नाम से ललितादित्य को काश्मीर में अन्नदान शाला निर्माण करने की प्रेरणा दी । इस अन्नशाला में लक्षाधिक यात्रियों को प्रतिदिन अन्नदान की व्यवस्था थी । तथा ललितादित्य की विजययात्रा में कर्णाटक देश की रट्टा नामक रानी की युद्ध में मृत्यु होने पर उसके अनाथ बालक को स्वामीजी की प्रेरणा से राज्यपद पर राजा ने प्रतिष्ठित किया था ।

चौंतीसवें पीठाधीश्वर **चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० ६९१-७०९) काश्मीर में जैनमत प्रचार करनेवाले चकुण नामक नास्तिक को वाद में परास्त करके शास्त्रोक्त धर्म का संरक्षण किया ।

अड़तीसवें पीठाधीश्वर **अभिनव शङ्कराचार्य नाम से प्रसिद्ध धीर शङ्करेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० ७८८-८३९) के काल में सम्पूर्ण भारत में म्लेच्छों का दुर्मत फैले हुए थे । तब आद्य शङ्कराचार्य जी के अवतार जैसे उन्होने सम्पूर्ण भारत में विजय यात्रा करके सनातन धर्म एवं अद्वैत सिद्धान्त का पुनः प्रतिष्ठापन किया । तब काश्मीर तक आकर क्षीरस्वामी प्रभृति आठ महाविद्वानोंको पराजित करनेवाले दुर्जय पण्डित भट्टोद्भट को वाद में जीत कर वाग्देवी शारदा के समक्ष काश्मीर में सर्वज्ञपीठ में आरोहण किया । गुरुरत्नमाला सुषमा और सुषमा में उद्धृत शङ्करेन्द्रविलास सद्गुरुसन्तानपरिमल आदि अनेक ग्रन्थों मे यह विषय उल्लिखित है । इनकी ब्रह्मपद प्राप्ति हिमालय में हुई ।

छियालीसवें पीठाधीश्वर **सान्द्रानन्द बोधेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० १०६०-१०९७) के काल में काञ्ची शारदाश्रीमठ पर म्लेच्छों ने आक्रमण किया । उस समय इन आचार्यचरणों से प्रेरणा पाकर कलशेश्वर नामक काश्मीर राजा के मन्त्री ने उपद्रवकारियों को भगाकर श्रीमठ की रक्षा की । इनकी ब्रह्मपद प्राप्ति अरुणाचल में हुई ।

सैंतालीसवें पीठाधीश्वर **चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० १०९७-११६५) के काल में काश्मीर में कुमारपाल नामक जैन राजा राज्य करता था । वह हेमाचार्य नामक जैनाचार्य के द्वारा सम्मोहित था । आचार्यचरणों ने उस राजसभा में अद्वैततत्त्व का प्रतिपादन कर हेमाचार्य को परास्त कर पुनः सनातन धर्म को प्रतिष्ठापित किया ।

अड़तालीसवें आचार्य **अद्वैतानन्दबोधेन्द्रसरस्वती जी महाराज** (ई० ११६५-११९९) प्रसिद्ध काश्मीर शैवागमवेत्ता अभिनवगुप्त के साथ शास्त्रार्थ में जय प्राप्त कर उन से पूजित हुए थे ।

गुरुरत्नमाला सुषमा पुण्यश्लोकमञ्जरी इत्यादि ग्रन्थों से स्थालीपुलाक न्याय में काश्मीर और काञ्ची कामकोटि पीठ के सम्बन्ध के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं । शोध करने पर और भी विषय प्राप्त हो सकते हैं ॥

-*-*-*-